Gupta period (Part -19)

चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य

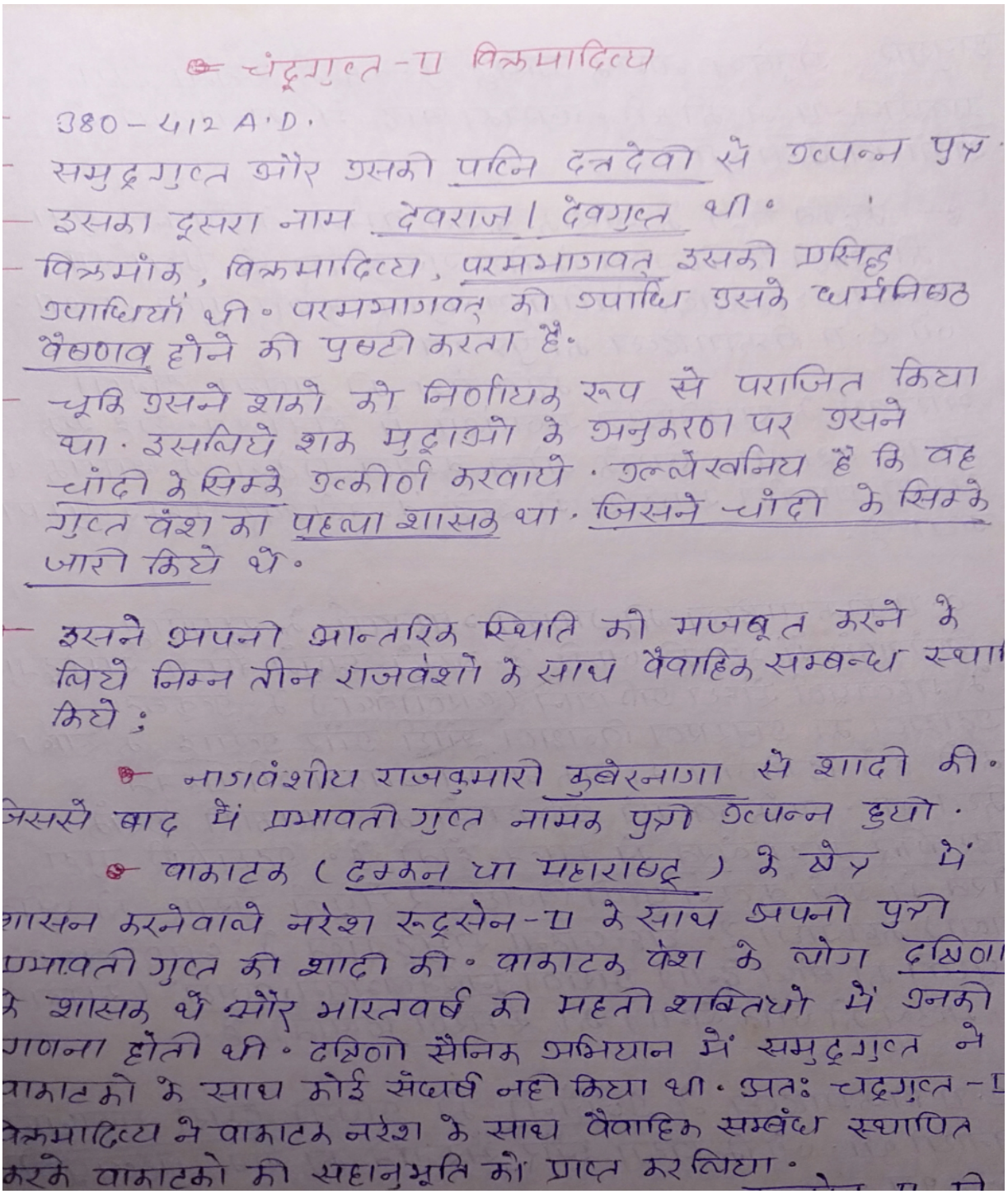

चंद्रगुप्त-II विक्रमादित्य

- 380 – 412 A.D.
- समुद्रगुप्त और उसकी पत्नि दत्तदेवी से उत्पन्न पुत्र.
- उसका दूसरा नाम देवराज । देवगुप्त था.
- विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत उसकी प्रसिद्ध उपाधियाँ थी. परमभागवत की उपाधि उसके धर्मनिष्ठ वैष्णव होने की पुष्टी करता है.
- चूकि उसने शको को निर्णायक रूप से पराजित किया था. इसलिये शक मुद्राओ के अनुकरण पर उसने चाँदी के सिक्के उत्कीर्ण करवाये. उल्लेखनिय है कि वह गुप्त वंश का पहला शासक था, जिसने चाँदी के सिक्के जारी किये थे.
- इसने अपनी आन्तरिक स्थिति को मजबूत करने के लिये निम्न तीन राजवंशो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये;
  - नागवंशीय राजकुमारी कुबेरनागा से शादी की. जिससे बाद में प्रभावती गुप्त नामक पुत्री उत्पन्न हुयी.
  - वाकाटक (दक्कन या महाराष्ट्र) के क्षेत्र में शासन करनेवाले नरेश रूद्रसेन-II के साथ अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त की शादी की. वाकाटक वंश के लोग दक्षिण के शासक थे और भारतवर्ष की महती शक्तियो में उनकी गणना होती थी. दक्षिणी सैनिक अभियान में समुद्रगुप्त ने वाकाटको के साथ कोई संघर्ष नही किया था. अतः चंद्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने वाकाटक नरेश के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित करके वाकाटको की सहानुभूति को प्राप्त कर लिया.

अनुसार, सेतुबंध नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना उसी प्रवरसेन-II ने की थी। जिसका बाद में कालीदास ने संशोधन किया था।

- कदम्ब वंश के शासक कुस्थ वर्मन ने अपनी पुत्री की शादी किसी गुप्त वंशीय राजकुमार से किया था। संभवतः यह गुप्त वंशीय राजकुमार कुमार गुप्त-I था। जो C.II विक्रमादित्य का पुत्र था।

कदंब वंश की गणना दक्षिणी भारतवर्ष के सुप्रतिष्ठित राजवंशो में होती थी। यह एक ब्राह्मण वंश था। जिसके नरेश कुन्तल प्रदेश के शासक थे अतएव प्राचीन साहित्य में इन्हें 'कुन्तलेश्वर' कहकर पुकारा गया है।

- C.II विक्रमादित्य की गणना भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विजेताओ में भी की जाती है। उसने अपने पिता समुद्रगु के महत्वपूर्ण सैन्य अभियान (धरणीबंध) के उत्कृष्ट उदाहरण का अनुसरण विलक्षण शौर्य और उत्साह के साथ करते हुये दिग्विजय का एक नवीन आदर्श भी प्रस्तुत किया था। उसके विजय अभियानो की जानकारी उसके उदयगिरि गुहा लेख से प्राप्त होती है। उदयगिरि गुहा लेख में उसे "कृत्स्न पृथ्वी विजय" (संपूर्ण संसार को जी वाला) कहा गया है। यह घटना समुद्रगुप्त के "धरणीबंध" पृथ्वी को बांध देना) अथवा "निखिलभुवनविजय" (सकल भू-मण्डल को जीत लेना) का स्मरण दिलाती है।

C.II विक्रमादित्य ने उज्जैनी को अपनी दूसरी राजधा बनायी थी। जो कि विद्या और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

ट:- C.II विक्रमादित्य के समकालीन नगरो में पाटलीपु तथा उज्जैनी सर्वश्रेष्ठ थे।